राही ! रूकती नहीं जवानी

चलते चल अभिमानी !
मानी, मंजिल मात्र निशानी ।।

छोड़ो जग के जाल तूफानी
क्यूँ दृग में है पानी ?
क्यूँ मंजरियों के बल गूँजे
कोकिल तेरी वाणी ?
मुक्त कण्ठ हैं, मुक्त गगन है
तेरी आत्म कहानी ।
राही ! रूकती नहीं जवानी
चलते चल अभिमानी !
मानी मंजिल मात्र निशानी ।।

अपने उर में अपन घर हो
क्यूँ दर दर दीवानी ?
क्यूँ डेरों से प्रीत लगाती
पल दो पल वीरानी ।
चाहों से चातक रातों में
मिलते नहीं सयानी ।
यें हैं बातें बहुत पुरानी ।।
चलते चल अभिमानी !
मानी, मंजिल मात्र निशानी ।।